स्पन्दन

अंक 09, वार्षिक हिंदी पत्रिका

2023 2023 2023

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

School of Planning and Architecture, Bhopal

An Institute of National Importance, Ministry of Education, Government of India

:–संस्थान गान–:

''नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नम्याम्ह्यम्।।''

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज।।
श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर में भी प्रीति जगाई।
ताजमहल पर गर्व हमें हैं, जग भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजाएं साज़।।
मलिन हो गई धरा आज फिर, उसको पुनः सजाएं।
हरित शिल्प से चलो सृजन का, नारा हम दोहराएं।।
सोये आदर्शों को आओ, सब मिल पुनः जगाएं।
नूतन सृजन हो शिव सृजन, दुनिया में पहुँचाएं।।

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
एस.पी.ए. के छात्र करेंगे, नवयुग का आगाज़।।

:–संस्थान गीत–:

ढूंढ रहा था, इक नया उजाला,
फिर मिला तू, इस नयी राह में।
तू ही जिन्दगी, तू ही मंजिल,
तू ही हर खुशी, इस दास्तान में।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे... एसपीए, भोपाल।
तेरी दुआ से, कुछ बन जाऊंगा,
तेरे नाम को, मिटने ना दूंगा।
जहां जहां पर, मेरे कदम पड़ेंगे,
वहाँ तेरा फिर, निशां दिखेगा।
ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे ....

एसपीए, भोपाल

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ
01	निदेशक संदेश	01
02	संपादकीय	02
03	शैक्षणिक एवं प्रशासनिक गतिविधियाँ	03
04	अभिव्यक्तियाँ	21

नोट– पत्रिका में प्रकाशित सभी कविताएँ, रेखा चित्र, यात्रा वर्णन, संस्मरण इत्यादि रचनाकार द्वारा रचित उसके स्वयं के विचार दर्शाते हैं न कि संस्थान के तथा अपनी रचनाओं के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है।

निदेशक संदेश

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल 'सृजनात्मकता के संस्थान' के रूप में विकसित हो रहा है जहां विद्यार्थियों, अनुसंधानकर्ताओं, प्राध्यापकों एवं समाज में निरीक्षण की भावना प्रबल होगी। योजना तथा वास्तुकला विद्यालय, व्यापक अभिकल्पना के द्वारा सामाजिक समन्वय, सरंक्षण के द्वारा सांस्कृतिक समन्वय एवं योजना तथा वास्तुकला शिक्षा के माध्यम से पर्यावरणीय समन्वय को बनाये रखने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

यह अत्यंत हर्श का विषय है कि विगत वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे संस्थान में राजभाषा ''हिंदी'' के प्रोत्साहन स्वरूप हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के नवम् अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में संस्थान से जुड़ी शैक्षणिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसके साथ ही साथ विभिन्न आलेख, सृजन साहित्य, कवितायें, संस्मरण एवं संस्थान के सभी कर्मचारियों की अभिव्यक्तियों एवं विचारों का समावेश किया गया है।

मैं इस पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु स्पंदन से जुड़े सभी शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को शुभकामनायें देता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

प्रो. (डॉ.) कैलासा राव एम.

साक्षी भाव

विचार सदैव गतिमान रह कर हमें विचलित करते रहते हैं। हम कुछ क्षणों के लिये अपने विचारों पर नियन्त्रण करने का प्रयास करते हैं तो वे सतत प्रवाह में हमें प्रवाहित कर ले जाते हैं। मन विचारों के साथ भटकता रहता है। हमें मन की स्वतंत्रता पर अधिक सतर्क होने की आवश्यकता है अपेक्षाकृत बाहरी स्वतंत्रता से। मन हमेशा भ्रम निर्मित करता है जो हमारी कार्यप्रणाली को नियंत्रित करता है।

मन को समझना बाहरी ज्ञान नहीं अपितु आत्म ज्ञान की यात्रा है जो हमें भीतर की ओर ले जाती है। यह यात्रा पूरी हो जाती है तो हम मन के प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं। यह यात्रा हमें चेतना की गहराईयों में ले जाती है। अतः हमें इस यात्रा पर निकलना होगा।

हम जिन गतिविधियों में रहते हैं उनसे मन को बांधा नहीं जा सकता क्योंकि मन का मूल स्वभाव अलग रहना है यह संसार में बंधना नहीं चाहता अतः यह निर्विकार है। हमें यह देखना होगा कि मन किस प्रकार विचारों को जन्म देता है इन विचारों पर हमें अपना निर्णय नहीं देना चाहिए क्योंकि यह एक शोमेन है जो अलग अलग प्रकार के सारे शो दिखाता रहता है। हमें साक्षी भाव अपनाकर अपने मन और उसकी गतिविधियों को एक पर्यवेक्षक की तरह अनासक्त भाव से देखना होगा।

जब हम अपने मन को पर्यवेक्षक के रूप में देखते है। तो मन की गतिविधियों हमें पता लगेगा की हम और हमारा मन अलग है। अतः हम मन के समस्त विचारों को नष्ट कर ध्यान द्वारा साक्षी भाव में प्रवेश करते हैं।

-सम्पादक मण्डल

गणतंत्र दिवस समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के परिसर में 72 वां गणतंत्र दिवस समारोह 26 जनवरी 2023 को मनाया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. चंद्र चारू त्रिपाठी ने ध्वजारोहण किया व सुरक्षा गार्ड ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। प्रो. त्रिपाठी ने अपने उद्‌बोधन में वर्ष 2022 के दौरान हुई संस्थान की उपलब्धियों के बारे में बताया। सांस्कृति कार्यक्रम : कार्यक्रम में संस्थान के छात्रों एवं परिसर में निवासरत कर्मचारियों के बच्चों ने बड़े ही उत्साह से नृत्य, संगीत एवं नाटक की प्रस्तुति दी। संस्थान के सभी संकाय सदस्य, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगणों ने कार्यक्रम का आनंद लिया।

हिन्दी कार्यशाला : तनाव प्रबंधन

संस्थान परिसर में दिनांक 21 फरवरी 2023 को संस्थान के अधिकारीगणों एवं कर्मचारीगणों के लिये हिन्दी कार्यशाला का आयोजन ''तनाव प्रबंधन विषय'' पर किया गया था। प्रशिक्षक के रूप में प्रो. निशीथ दुबे, प्राध्यापक, एन.आई.टी.टी.टी.आर. भोपाल सादर आमंत्रित थे। प्रशिक्षण सत्र में प्रो. दुबे ने कार्यालयीन कार्यों में तनाव मुक्त कार्य करने के तरीके, शारीरिक अभ्यास, योग, कार्यालयीन व्यवहार में सुधार, मनोरंजन, सकारात्मक सोच का निर्माण, अन्य सहायक विषय पर चर्चा की जिससे कार्य के दौरान तनाव को कम या समाप्त किया जा सके।

विशेष व्याख्यान : वास्तु के सिद्धांतों को समझना एवं उन्हें वास्तुकला में लागू करना

संस्थान परिसर में दिनांक 23 फरवरी 2023 ''वास्तु के सिद्धांतों को समझना एवं उन्हे वास्तुकला में लागू करना'' विषय पर विशेष व्याख्यान संस्थान के सभी संकाय सदस्य, कर्मचारियों एवं छात्रों के लिए आयोजित किया गया। विशेषज्ञ के रूप में आर्कि. रितेश हरवानी, प्रख्यात वास्तुविद एवं इंटीरियर डिजाइनर, आमंत्रित थे।

पायथन प्रोग्रामिंग के मूल सिद्धांत पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

दिनांक 20 मार्च 2023 को परिवहन योजना विभ. ाग, द्वारा जी 20 – से संबंधित एक पहल के रूप में, सुबह 10:00 बजे से दोपहर 01:00 बजे तक ''फंडामेंटल्स ऑफ पायथन प्रोग्रामिंग'' पर एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान श्री मिधुन मुरुकेश द्वरा दिया गया था, जो पायथन में व्यापक ज्ञान रखने वाले एक प्रोग्रामर हैं। व्याख्यान एम.प्लान (टीपीएलएम) सेमेस्टर– 2 के लिए ''इंटेलिजेंट ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम'' (एमपी. टीपी 0204) विषय में नामांकित छात्रों के लिए डिजाइन किया गया था। एम.प्लान (टीपीएलएम) सेमेस्टर– 2 और एम.प्लान (यूआरपी) सेमेस्टर– 2 सहित विभिन्न अन्य सेमेस्टर के छात्रों ने भी इस शैक्षिक सत्र में भाग लिया।

जी 20 भविष्य पर पुनर्विचार : परिवहन योजना का मूल्यांकन पर एक विशेष कार्यक्रम

दिनांक 29 मार्च 2023 को आयोजित जी 20 भविष्य पर पुनर्विचार : परिवहन योजना का मूल्यांकन पर एक विशेष कार्यक्रम में एम.प्लान (टीपीएलएम) चतुर्थ सेमेस्टर के छात्रों का सेक्टोरल रिसर्च रिव्यू कराया गया एवं एम.प्लान (टीपीएलएम) द्वितीय सेमेस्टर बैच की स्टूडियो समीक्षा की गई। डा. प्रसाद, अतिथि संकाय द्वारा ''विद्यालयीन छात्रों की गतिशीलता के विकल्प–कोलकाता का एक मामला'' पर एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान के बाद छात्रों के कार्यों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसमें थीसिस वर्क और स्टूडियो वर्क के 30 पोस्टर प्रदर्शित किए गए।

उत्तम आर्किटेक्ट अवार्ड्स, 2023 में प्रथम स्थान

मंगलम सीमेंट्स, उत्तम आर्किटेक्ट अवार्ड्स, 2023 द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में 5 छात्रों की एक टीम ने एस. पी.ए. भोपाल का प्रतिनिधित्व किया। टीम ने 32 प्रतिस्पर्धी कालेजों के बीच 'प्रथम पुरस्कार' जीता तथा सर्वश्रेष्ठ सामाजिक और लागत प्रभावी डिजाइन के लिए भी एसपीए भोपाल के छात्रों की टीम को चुना गया है। टीम को प्रथम स्थान में 1 लाख रुपये की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया और सर्वश्रेष्ठ सामाजिक और लागत प्रभावी डिजाइन होने के लिए अतिरिक्त 10,000 रुपये का पुरस्कार दिया गया। टीम के सदस्य थे अंश आनंद मिश्रा, उर्जशी बोस, शुभांगी शर्मा, शुभी मित्तल, सान्या मल्होत्रा एवं टीम मेंटर थे आर्कि. सौरभ पोपली, सह प्राध्यापक, एसपीए भोपाल।

फेस्टिवल ऑफ प्लेसेस प्रतियोगिता में एसपीए भोपाल के छात्रों का प्रथम स्थान

एसपीए भोपाल के छात्र एम.आर्क अर्बन डिजाइन बैच की साईं अतिका वी. वी. और तेजश्री राडे ने 'मेकिंग सिटीज इनक्लूसिव' थीम पर आधारित 'फेस्टिवल ऑफ प्लेसेस' के चौथे संस्करण में पहला स्थान प्राप्त किया है। इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स और सेंटर फॉर एडवांसमेंट ऑफ ट्रेडिशनल बिल्डिंग टेक्नोलॉजी एंड स्किल्स द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित सार्वजनिक स्थानों में बच्चों के स्थान की खोज, प्रतियोगिता के इस संस्करण में शहरों और कस्बों में सार्वजनिक स्थानों को संवेदनशील बनाने पर ध्यान दिया गया। बच्चों की जरूरतें, एक अत्यंत कमजोर उपयोगकर्ता समूह। 10–12 मिनट का एक वीडियो बनाने की चुनौती थी,

जिसमें बच्चों के इर्द–गिर्द बुनी गई कहानी और किसी भी पैमाने के सार्वजनिक स्थान पर उनका स्थान और बच्चों को और अधिक समावेशी बनाने के लिए विचारों नवोन्मेषी उपायों का सुझाव देना था।

हमारी प्रविष्टि, जो भोपाल की ऊपरी झील के किनारे बच्चों के स्थान को देखती है (वर्धमान पार्क से बोटिंग क्लब तक का खिंचाव), ने 17 दिसंबर 2022 को शीर्ष 5 शॉर्टलिस्ट की गई प्रविष्टियों में पहला स्थान प्राप्त किया। यह कार्यक्रम नई दिल्ली में आईजीएनसीए एम्फीथिएटर में आयोजित किया गया था।

एसपीए भोपाल में विश्व जल दिवस का आयोजन

दिनांक 22 एवं 23 मार्च 2023 को संस्थान परिसर में विश्व जल दिवस मनाया गया। उक्त आयोजन में छात्रों के मध्य फोटोग्राफी एवं पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। छात्रों ने अपनी प्रतिभाओं को फोटो एवं पोस्टरों पर उकेरा, विजयी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

प्रशिक्षण एवं प्रस्थापना

प्रशिक्षण एवं प्रस्थापना प्रकोष्ठ के द्वारा दिनांक 27.03.2023 को सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट पर एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें अंतिम वर्ष के लगभग 70 विद्यार्थी उपस्थित थे, यह विशेष व्याख्यान प्रोफेसर अजय श्रीवास्तव द्वारा लिया गया। व्याख्यान मे प्रोफेसर श्रीवास्तव ने छात्रों को अपनी सोशल मीडिया प्रोफाइल की ब्रांडिंग के लिए, स्टार्ट अप्स एवं साफ्टवेर इंडस्ट्रीज के कोर एरिया पर कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए, यह सुझाव निश्चित ही छात्रों के आने वाले साक्षात्कार/ जीवन यात्रा में उन्हें लाभ पहुंचाएंगे। इस त्रैमासिक में प्रशिक्षण और प्रस्थापना प्रकोष्ठ के द्वारा 7 कंपनियों द्वारा साक्षात्कार लिए गए, जिसमें लगभग 200 छात्र/छात्राओं ने भागीदारी ली जिसमें से 18 चयनित हुए।

अंतराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

दिनांक 21 जून 2023 को एसपीए भोपाल में अंतराष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन किया गया। उक्त आयोजन में विवेकानंद योग केंद्र कन्याकुमारी की भोपाल शाखा के प्रशिक्षकों को योग अभ्यास हेतु आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर संस्थान के कुलसचिव श्री शाजू वर्गीज जी ने सभी का स्वागत किया। प्रशिक्षकों द्वारा शिविर में योग अभ्यास कराया गया व योग के लाभ और योग के प्रति जागरूकता हेतु व्याख्यान भी दिया गया। संस्थान में कार्यरत समस्त अधिकारी, कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं ने योग, प्राणायाम आदि का अभ्यास सीखा एवं दैनिक जीवन में योग करने हेतु प्रेरित हुए। श्री मनीष झोकरकर, सहायक कुलसचिव द्वारा प्रशिक्षकों एवं समस्त योग कर्ताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

कार्यशाला का आयोजन

यूनिसेफ, भोपाल के सहयोग से पर्यावरण योजना विभाग द्वारा संयुक्त रूप से 15 मई 2023 को होटल मैरियट, भोपाल में ''ग्राम पंचायतों की जलवायु का विकास'' मध्य प्रदेश का एक परिप्रेक्ष्य'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें पर्यावरण नियोजन विभाग के संकाय सदस्यों और छात्रों ने मध्य प्रदेश के दो जिलों अलीराजपुर और छतरपुर पर काम किया था।
अलीराजपुर के केस अध्ययन में नदी के किनारों से मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए उपयुक्त रणनीतियों की पहचान की गई थी।

शहरों में आपदा, रेज्यिलेंट और जलवायु परिवर्तन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

पर्यावरण योजना विभाग, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्था (एनआईडीएम) नई दिल्ली और एनआईटीटीटीआर भोपाल द्वारा संयुक्त रूप से 17 से 19 अप्रैल 2023 को ''शहरों में आपदा, रेज्यिलेंट और जलवायु परिवर्तनः एसडीजी का स्थानीयकरण'' पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण सह संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारम्भ पर्यावरण एवं पशुपालन मंत्रालय के प्रधान सचिव गुलशन बामरा और एनआईडीएम के डॉ. अनिल गुप्ता ने किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण विशेषज्ञों ने आपदा और जलवायु रेज्यिलेंट के सभी पहलुओं के बारे में विस्तार से बताया। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में देशभर के विभिन्न विभागों से लगभग 53 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यशाला का संयोजन (पर्यावरण नियोजन) डॉ. रमा पांडे

प्रशिक्षण एवं प्रस्थापना प्रकोष्ठ के द्वारा सेमिनार का आयोजन

दिनांक 21 अप्रैल, 2023 को ''फ्रांस में उच्च शिक्षा, इंटर्नशिप और छात्रवृत्ति के अवसर'' पर सेमिनार का आयोजन किया। जिसमें अंतिम वर्ष के लगभग 70 विद्यार्थी उपस्थित थे, यह विशेष व्याख्यान दिव्या सक्सेना (भारत में फ्रांस के दूतावास के कैंपस फ्रांस मैनेजर–इंदौर/भोपाल) द्वारा लिया गया।

विशेष व्याख्यान का आयोजन

सहायक प्राध्यापक गौरव सिंह (वास्तुकला विभाग) और वास्तुविद सुश्री गरिमा सिंघल (वास्तुकला विभाग) द्वारा प्रशिक्षण और नियुक्ति प्रकोष्ठ के समन्वय के साथ दिनांक 1 मई 2023 को एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें अंतिम वर्ष के लगभग 70 विद्यार्थी उपस्थित थे, यह विशेष व्याख्यान शिवम गुप्ता, डिजाइन लीड (डेटा सेंटर), अदानी कॉनेक्स, द्वारा दिया गया। व्याख्यान मे छात्रों को वास्तुकला मे नौकरी की अवसर पर कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए, यह सुझाव निश्चित ही छात्रों के आने वाले साक्षात्कार/जीवन यात्रा में उन्हें लाभ पहुंचाएंगे। इस कार्यकाल में कई वैश्विक ख्याति वाली कंपनियों/फर्मों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है।

जिनमे लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड, टाटा कंसल्टेंसी इंजीनियरिंग लिमिटेड, इंफोसिस वोंगडूडी, अर्नेस्ट एंड यंग ग्लोबल लिमिटेड, एशियन पेंट्स लिमिटेड, जेएलएल इंडिया और कई नामी कंपनियां शामिल हैं। इस अवधि में प्रशिक्षण और नियुक्ति प्रकोष्ठ के द्वारा 20 कंपनियां साक्षात्कार लिए गए, जिसमें लगभग 100 छात्र छात्राओं ने भागीदारी की जिसमें से 50 चयनित हुए।

एस.पी.ए. भोपाल के छात्रों ने जीता बर्कले निबंध प्रतियोगिता का खिताब

एस.पी.ए. भोपाल के छात्रों ने बर्कले निबंध पुरस्कार 2023 में भाग लिया, जो यूसी बर्कले में वास्तुकला विभाग द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता है। संस्थान के छात्र 2023 की 24 सेमीफाइनलिस्ट टीमों में से दो में शामिल थे। राशि कारकून (चतुर्थ वर्ष, वास्तुकला) और उपासना पाटगिरी (अंतिम वर्ष, योजना): ने सबकी मंडी: बुजुर्गों के लिए एक समावेशी सार्वजनिक स्थान के रूप में भारत के बाजारों को बढ़ाना, निबंध प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल किया। सावी नाटेकर (अंतिम वर्ष, आर्किटेक्चर) ने अजीजा चाओनी प्रोजेक्ट्स, फेस, मोरक्को के साथ लैम अलिफ मीडिया लाइब्रेरी प्रोजेक्ट पर एक स्वयंसेवक के रूप में काम करने के लिए ट्रैवल फेलोशिप हासिल की।

एस.पी.ए. भोपाल के छात्रों ने जीता उत्तम आर्किटेक्ट अवार्ड्स, 2023

मंगलम सीमेंट्स, उत्तम आर्किटेक्ट अवार्ड्स, 2023 के द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता में 5 छात्रों की एक टीम ने एस.पी.ए. भोपाल का प्रतिनिधित्व किया। उक्त टीम ने 32 प्रतिस्पर्धी कॉलेजों के बीच 'प्रथम पुरस्कार' हासिल किया और 2 कठिन राउंड के मूल्यांकन के बाद सर्वश्रेष्ठ सामाजिक और लागत प्रभावी डिजाइन के लिए भी चुना गया है।

इस प्रतियोगिता में एसपीए भोपाल का प्रतिनिधित्व करना और ऐसे प्रतिष्ठित जूरी सदस्यों के सामने डिजाइन प्रस्तुत करना टीम के लिए सम्मान की बात थी। टीम को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर एक लाख रुपये की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया और सर्वश्रेश्ठ सामाजिक और लागत प्रभावी डिजाइन के लिए अतिरिक्त 10,000 रुपये भी प्रदान किये गए। जूरी ने टीम के उत्साह, प्रतिस्पर्धी भावना, समर्पण और कड़ी मेहनत की सराहना की जो उनके डिजाइन में दिखाई दी और उसी के लिए एक ट्रॉफी प्रदान की।
टीम के सदस्य थे : 1. अंश आनंद मिश्रा (टीम कप्तान) (तृतीय वर्ष) 2. ऊजशी बोस (तृतीय वर्ष) 3. शुभांगी शर्मा (द्वितीय वर्ष) 4. शुभि मित्तल (द्वितीय वर्ष) 5. सान्या मल्होत्रा (द्वितीय वर्ष) । टीम मेंटर: श्री सौरभ पोपली, सह प्राध्यापक थे।

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला में सहभागिता

श्री धीरेंद्र कुमार पधान, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष एवं हिंदी प्रभारी अधिकारी, एसपीए भोपाल ने 5–9 जून, 2023 के दौरान केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला ''उच्च स्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण'' में भाग लिया।

डिजाइन विभाग में कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 08 मई 2023 को डिजाइन विभाग द्वारा एमडेस 402 (प्रदर्शनी डिजाइन और पोर्टफोलियो) में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें अंतिम वर्ष के लगभग 25 छात्र उपस्थित थे। उक्त आयोजन में विशेष व्याख्यान सुश्री अल्पा जैन द्वारा दिया गया था। उन्होंने सोशल मीडिया प्रोफाइल, स्टार्ट अप के मुख्य क्षेत्रों और सॉफ्टवेयर उद्योगों की ब्रांडिंग के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए। जो की निश्चित रूप से छात्रों को उनके आगामी साक्षात्कार/भविष्य में लाभान्वित करेंगे।

विश्व पर्यावरण दिवस

दिनांक 05 जून 2023 को एस.पी. ए. भोपाल में विश्व पर्यावरण दिवस पर, साइकिल रैली का आयोजन फिटनेस, सामुदायिक जुड़ाव और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया। यह रैली सभी उम्र के लोगों के लिये आयोजित की गई थी संस्थान के स्टाफ ने इस रैली में उत्साह के साथ भाग लिया।

सेंट्रल रीजन अर्बन ट्रांसपोर्ट द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में एस.पी. ए. भोपाल के छात्रों का दूसरा स्थान

सेंट्रल रीजन अर्बन ट्रांसपोर्ट द्वारा एक प्रतियोगिता आयोजित की गई थी जिसमें बस क्यू शेल्टर (बीक्यूएस) और बस के पोल का डिजाइन करना था, जिसका निर्माण ओडिशा के विभिन्न शहरों में किया जाएगा। यह प्रतियोगिता वास्तुकला, शहरी नियोजन, परिवहन योजना और अन्य संबंधित क्षेत्रों के सभी पेशेवरों के लिए खुली थी। एस.पी.ए. भोपाल के छात्रों की एक टीम जिसमें (काजल राणा, बी आर्क. तृतीय वर्ष, ऋचा मरकाम, बी आर्क. तृतीय, वर्ष सुशमा रानी, बी आर्क. तृतीय वर्ष) ने इस प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त किया जिसमें टीम को 7000 रुपये की राशि पुरस्कार स्वरूप प्राप्त हुई।

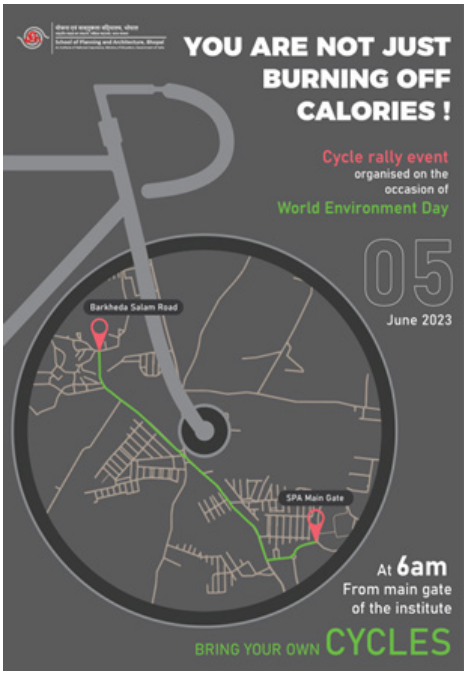

स्वतंत्रता दिवस समारोह

संस्थान ने बड़े उत्साह के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया। एस.पी.ए. भोपाल के निदेशक प्रो. कैलासा राव एम. ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और छात्रों, कर्मचारियों और शिक्षकों की सभा को संबोधित किया। अपने प्रेरक भाषण में उन्होंने एस.पी.ए. भोपाल परिवार के सभी सदस्यों से इस संस्थान को और ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए सभी हितधारकों के सामूहिक प्रयासों को बनाए रखने का आह्वान किया।

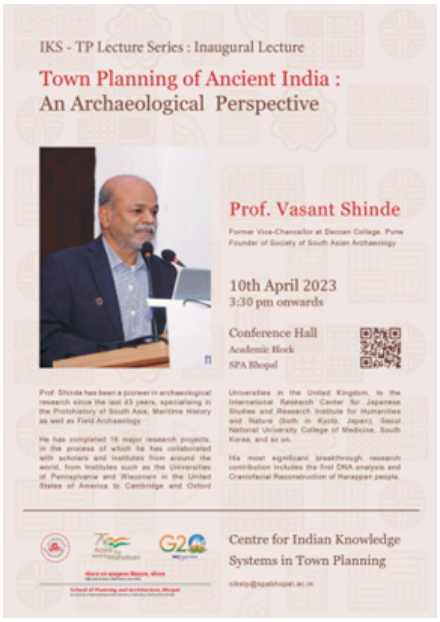

भारतीय ज्ञान संपोशण केंद्र (सी–आईकेएस–टीपी) का उद्घाटन एवं उसके अंतर्गत व्याख्यान माला का प्रथम आयोजन

भारतीय ज्ञान संपोषण केंद्र (सी–आईकेएस–टीपी) के अनावरण अवसर पर 10 अप्रैल को एस. पी. ए. भोपाल में ''प्राचीन भारत में नगर योजना – एक पुरातात्विक दृष्टिकोण'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर के विशिष्ट अभिभाषक प्रोफेसर श्री वसंत शिंदे थे, जो दक्षिण एशिया के समुद्रयान और प्राकृतिक इतिहास में परियोजना प्रमुख हैं। वह राखीगढ़ी अनुसंधान परियोजना में आर्कियोजेनेटिक अनुसंधान और सांस्कृतिक संसाधन प्रबंधन के निदेशक के पद पर नियुक्त हैं और साथ ही, वे हैदराबाद में सीएसआईआर–केंद्रीय सेलुलर और आणविक जीवन विज्ञान के भटनागर फेलो के रूप में सेवारत हैं। प्रोफेसर शिंदे ने व्याख्यान के अन्तर्गत हड़प्पा और सिंधु घाटी सभ्यताओं के विभिन्न योजना एवं वास्तुकला तकनीकों पर विस्तृत चर्चा की एवं प्राचीन निर्माण शैली, निवास स्थानों, पेयजल प्रणाली, जल निकास व्यवस्था, और सार्वजनिक संरचनाओं की स्थापना पर प्रकाश डाला। साथ ही, उन्होंने सभ्यता के विभिन्न चरणों और उनके शासन और व्यापार व्यवस्था का उल्लेख किया। उनकी प्रस्तुति का समर्थन करने के लिए प्रोफेसर शिंदे ने लोथल, धोलावीरा, राखीगढ़ी, और मोहनजोदड़ो जैसे कई प्राचीन स्थलों की छवियों और दस्तावेजों का विवरण भी प्रस्तुत किया। सी–आईकेएस–टीपी के प्रथम व्याख्यान में योजना और वास्तुकला संभाग के विभिन्न छात्र एवं अध्यापक सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस पर पुस्तक प्रदर्शनी

12 अगस्त, 2023 को राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस और पुस्तकालय विज्ञान के जनक पद्मश्री डॉ. एस.आर. रंगनाथन की 131 वीं जयंती के अवसर पर, एसपीए भोपाल पुस्तकालय में तीन दिवसीय (12 अगस्त से 14 अगस्त 2023) एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्देश्य पुस्तकालय दिवस के बारे में जागरूकता फेलाना एवं पुस्तक संग्रह प्रदर्शित करना था। संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

प्रोक्वेस्ट डेजेटट्रेशन और थीसिस ग्लोबल पर जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम

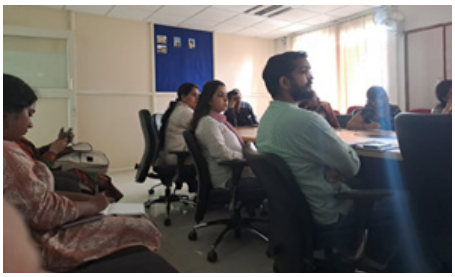

24 अगस्त, 2023 को संस्थान के पुस्तकालय विभाग द्वारा सभा कक्ष में प्रातः 11:30 बजे से प्रोक्वेस्ट डेजेट्ट्रेशन और थीसिस ग्लोबल (पीक्यूडीटी) पर जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। उक्त प्रशिक्षण में श्री संजय राजन, सीनियर कस्टमर प्रशिक्षक– एपीएसी, क्लै. रिवेट ने डेटाबेस में शामिल नई सुविधाओं जैसे वेब साइंस इंटीग्रेशन, एवं अन्य तकनीकी पर एक लाइव डेमो दिया। पीक्यूडीटी डेटाबेस द्वारा दी जाने वाली सेवाओं को समझने के लिए संकाय सदस्यों और शोध छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया। कुल मिलाकर, यह कार्यक्रम सभी उपयोग. कर्ताओं, विशेषकर छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी रहा। जिसमें उन्होंने इसे बेहतर उपयोग की ओर प्रेरित किया।

हिंदी पखवाड़ाः 2023

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित 'राष्ट्रीय महत्व का संस्थान' है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान परिसर में हिन्दी पखवाड़ा दिनांक 04 से 22 सितम्बर 2023 के मध्य बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ 4 सितम्बर को किया गया उक्त आयोजन में मुख्य अतिथि एवं व्याख्याता के रूप में डॉ. हरिओम गोस्वामी, निदेशक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल को आमंत्रित किया गया था। संस्थान के राजभाषा विभाग के इस आयोजन में हिन्दी भाषा के ज्ञान के संवर्धन व व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु कर्मचारियों की पृथक–पृथक प्रतियोगिताऐं आयोजित की गई जैसे 'प्रशस्ति पत्र डिजाइन, पोस्टर डिजाइन, निबंध लेखन, स्वरचित कविता पाठ, गजल एवं भजन, हिंदाक्षरी सुलेख लेखन, चित्रांकन एवं सुलेख जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं में संस्थान लगभग 150 संकाय सदस्य, कर्मचारी एवं छात्र छात्राओं ने भाग लिया। जिनमें से 41 प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये गये। हिंदी पखवाड़े के समापन निदेशक महोदय प्रो. डॉ. कैलासा राव एम. एवं संकायाध्यक्ष (अनुसंधान) प्रो. अजय खरे द्वारा किया गया। उक्त आयोजन में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को निदेशक महोदय एवं संकायाध्यक्ष (अनुसंधान) ने प्रशस्ति पत्र प्रदान किये।

स्वच्छता पखवाड़ा

एसपीए भोपाल ने माह सितंबर 2023 में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया। स्वच्छता पखवाड़े के दौरान संस्थान के छात्रों, संकाय सदस्यों एवं स्टॉफ द्वारा स्वच्छता प्रतिज्ञा ली गई। पखवाड़े के दौरान संस्थान परिसर के विभिन्न स्थान जैसे, मेस, छात्रावास, लॉबी, खेल का मैदान, नवीन निर्मित भवन के समीप, आदि स्थानों को चिन्हित कर लिया गया था एवं प्रतिदिन समूह वार संस्थान के कर्मचारियों व छात्रों ने स्वच्छता गतिविधियां की ।

विरासत के 75 रंगों (शेड्स) पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन एस.पी.ए. भोपाल में

एस.पी.ए. भोपाल में विरासत के 75 रंगों (शेड्स) पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया गया, इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रोफेसर नलिनी ठाकुर, पूर्व प्रोफेसर (संरक्षण), एसपीए दिल्ली एवं विवेक पई, प्रख्यात वास्तुविद विशेष अतिथि थे। उद्घाटन व्याख्यान में दोनों गणमान्य व्यक्तियों ने भारतीय विरासत के संरक्षण के महत्व और इसके पीछे के विज्ञान पर प्रकाश डाला। सम्मेलन में भारत के 19 राज्यों से 100 प्रतिनिधि भाग लिया यह राष्ट्रीय सम्मेलन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्य प्रदेश सरकार, मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड, विजना भारती, आई.सी.ओ.एम.ओ.एस. इंडिया, एमपी काउंसिल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी और मीडिया पार्टनर दैनिक भास्कर के सहयोग से आयोजित किया गया।

दसवां दीक्षांत समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल का दसवां दीक्षांत समारोह 28 अक्टूबर 2023 को आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), नई दिल्ली के कार्यकारी और अकादमिक प्रमुख, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार थे इस अवसर पर बोर्ड ऑफ गवर्नर्स एवं सीनेट के सदस्य, संकाय सदस्य, कर्मचारीगण एवं स्नातक छात्र उपस्थित थे। कुल 241 छात्रों (80 स्नातक, 156 स्नातकोत्तर और 5 पीएचडी) को डिग्री प्रदान की गई। इसके अलावा, उत्कृष्टता के दो पदक, नौ प्रवीणता स्वर्ण पदक, नौ सर्वश्रेष्ठ थीसिस पुरस्कार और थीसिस के लिए प्रशंसा का एक प्रमाण पत्र भी दिया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023

संस्थान ने 30 अक्टूबर से 05 नवंबर 2023 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। 30 अक्टूबर 2023 को संकाय और स्टाफ सदस्यों द्वारा सतर्कता की शपथ ली गई। इसी तारतम्य में श्री भरत कुमार व्यास, सचिव, विधि एवं विधायी कार्य विभाग मध्य प्रदेश शासन, द्वारा ''भ्रष्टाचार विरोधी अधिनियम : राह और प्रक्रिया''पर एक विशेष व्याख्यान दिया गया।

समुन्नति 2023

योजना और वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के नगर नियोजन भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र, सांस्कृतिक ज्ञान प्रणाली केंद्र और संरक्षण विभाग ने संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से वास्तुकला परिषद द्वारा आयोजित समुन्नति 2023, कला वास्तुकला अभिकल्प छात्र द्विवार्षिकी में सफलता पूर्वक भाग लिया। उक्त आयोजन दिनांक 9 दिसंबर 2023 से 15 दिसंबर 2023 के मध्य ललित कला अकादमी मे था। इंटरएक्टिव प्रदर्शनी में 8 डिस्प्ले पैनल और 2 गेम शामिल थे, जिसमें प्राचीन ग्रंथों में आवास योजना को विजुअलाइज करने का अनुभाग, प्राचीन ग्रंथों से प्राप्त आवास योजना सिद्धांतों का परिचय और प्राचीन आवास योजना अवधारणाओं को समझने के लिए एक उपकरण के रूप में पदविन्यास पहेली का डिजाइन शामिल था। गवाक्ष बनाने का अनुभाग गवाक्ष रूपांकनों की उत्पत्ति और पूरे भारत में इसके विकास पर चर्चा करता है। इसके साथ गवाक्ष पहेली के 2 रूपांतर भी थे जिससे खिलाड़ियों को पहेली को हल करते समय गवाक्ष रूपांकन की जटिलता और गणितीय पैटर्न का पता लगाने की अनुमति मिली। प्रदर्शनी ने विभिन्न आयु समूहों के आगंतुकों 8 साल के बच्चों को पहेली से उलझाने से लेकर देश के विभिन्न हिस्सों से आए वास्तुशिल्प छात्रों और उनके प्रोफेसरों को आकर्षित किया। प्रदर्शनी की अपील डिजाइनरों के दायरे से परे बढ़ी और अन्य पेशेवरों को भी मंत्रमुग्ध कर दिया, जिन्होंने समृद्ध भारतीय वास्तुकला इतिहास और प्राचीन नगर नियोजन के बारे में जानने के साथ–साथ खोज में गहरी रुचि ली।

स्थापना दिवस व्याख्यान

संस्थान का स्थापना दिवस समारोह दिनांक 10 अक्टूबर 2023 को हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर, श्री विद्याधर के. पाठक, पूर्व प्रिंसिपल चीफ, टी एंड सीपी डिवीजन (एमएमआरडीए) ने ''भूमि मूल्य पर कब्जा'' एक वादा या एक चुनौती'' पर व्याख्यान दिया। और डॉ. अमिता भिडे, प्रोफेसर, सेंटर फॉर अर्बन पॉलिसी एंड गवर्नेंस, टीआईएसएस, मुंबई ने ''भारत में संपत्ति के सामाजिक कार्य की अवधारणा'' पर व्याख्यान दिया।

इस अवसर पर बी.आर्क की सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली छात्रा को ''गिरिराज किशोरी मेमोरियल मेडल 2023'' और बी.प्लान प्रोग्राम की सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली छात्रा को ''कल्याणी अम्माल मेमोरियल अवार्ड 2023'' दिए गए।

डिजाइन कार्यशाला

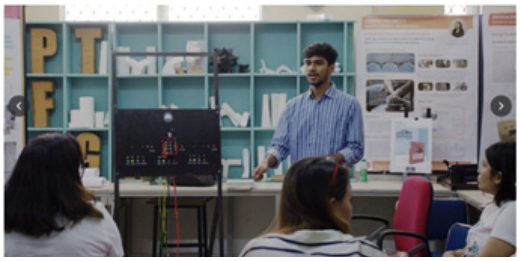

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के डिजाइन विभाग में कार्यशालाएं आयोजित की गईं। दिनांक 11, 12 और 13 अक्टूबर, 2024 को सुश्री नूपुर तिवारी द्वारा एब्स्ट्रैक्शन, पॉइंट ऑफ व्यूज एण्ड फ्रेम्सः विजुअल लैंग्वेज विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई थी। उस कार्यशाला में, छात्रों को संगीत से एक रचना की अवधारणा बनाना और डिजाइन सिद्धांतों का पालन करते हुए कॉमिक स्ट्रिप का डिजाइन और विकास करना सिखाया गया था। दूसरी कार्यशाला श्री निपुण प्रभाकर द्वारा 19 और 20 अक्टूबर, 2024 को प्रोजेक्ट 1 विषय में डिजाइनरों और डिजाइन आधारित फोटोग्राफी पर आयोजित की गई थी। छात्रों को भोपाल के विभिन्न स्थानों का दौरा करने और विभिन्न विषयों को पकड़ने और विभिन्न डिजाइन परियोजनाओं के लिए सामग्री प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था। कंप्यूटर एडेड प्रोडक्ट डिजाइन विषय की तीसरी कार्यशाला में विद्यार्थियों को भोपाल से श्री अजीत सिंह द्वारा एलियास सॉफ्टवेयर के साथ उत्पाद सतह मॉडलिंग को डिजाइन और विकसित करना सिखाया गया।

कविताएँ

यात्रा

मैं जहाँ से गया था,
यह सोच कर कभी,
कि वापस नहीं आऊंगा,
वही लौट आया हूँ वापस,
खुद से लड़ते–झगड़ते,
पहाड़, नदी, झरने, जंगल,
सभी को वही छोड़,
लौट आया हूँ,
फिर उसी सवाल का जवाब ढूँढने,
जिसे ढूँढने की यात्रा पर,
यहाँ से निकला था मैं,
इतने सालों की यात्रा, थकावट,
इतने जंगल, रस्ते, दुख,
झरने, रेत के टीले और न जाने
क्या–क्या छानने के बाद भी,
सवाल का जवाब वही मिला,
जहाँ से शुरू हुई थी यह यात्रा,
शायद सवाल का जवाब बस वही होता है,
मगर यात्राएँ जरूरी होते हैं,
जवाब ढूँढने के लिए ।।

शुभम चौधरी
छात्र, वास्तुकला

उनसे दूर हूँ, बस उनके लिये .....

उनसे दूर हूँ, बस उनके लिए..
याद तो हमें भी आती है,
रोज़–रोज़ बहुत सताती है ....
ना दिखाते हैं, न जताते हैं प्यार,
ना बतियाते हैं, ना करते हैं कॉल बार –बार ...
छुपे –रूस्तम हैं तो,
बताते नहीं, लेकिन याद करते हैं बार बार ....
उनसे दूर हूँ, बस उनके ही लिए,...
सपने तो हमारे भी हैं, जो कभी डराते भी हैं....
ना दिखाते हैं, ना जताते हैं उम्मीदें ....
पर कुछ आशाएं तो वो भी मन में बसाते हैं,

बस यही सोच .... वो दूर हमसे रह पाते हैं ....
जिंदगी बन जाए इसकी तो हम सफल हो जाऐं,
यह बात वह बार बार दोहराते हैं .....
उनसे दूर हूँ, बस उनके ही लिए ...
न जाने क्यूँ अक्सर में ही ये भूल जाती हूँ...
जिंदगी बनाने निकले हैं,
ना जाने क्यूँ बीच–बीच में डर जाते हैं ....
शायद इसलिए क्यूंकि .....
उनसे दूर हूँ, बस उनके ही लिए ....
जिन्हें हम जनक – जननी गर्व से बुलाते हैं।

बेबस जिंदगी में कई खौफ कैद है।
कुछ संभल रहे हैं खुद से,
कुछ खुद में ही कैद है।
कहने को तो बस शब्द है,
इंसान तो जज्बातों में कैद हैं।
खुद को खो देते हैं,
दूसरो को अपनाने की हौड़ में,
कुछ लोग अपनी अपेक्षाओं में ही कैद हैं।
कभी कभी कहना समझाने
से भी मुश्किल हो जाता हैं,
ये बढ़ती कश्म–कश ही तो इश्क में कैद हैं।

नैना बसंल, छात्रा

आशा

खिड़की पे बैठा मेरा चंदा
सारे शहर को यूँ निहारे
गलियों में फिरता मैं आवारा
उसके लिए खरीदूँ तारे
वो अंजान है, वो नादान है
समझता नहीं मेरे इशारे
मैं शरमाऊँ भी, मैं घबराऊँ भी
न जाने क्या हों उसके इरादे

चंदा क्यों चाहेगा सितारे
उनको फलक पे तू सजा दे
बैठी मैं ख्वाबों के सिरहाने
तकती हूँ बस तेरी राहें
मैं नादान सही, पर अंजान नहीं
समझ गयी तेरे सारे इशारे
क्यों शर्माए तू, क्यों घबराए तू
जो हैं तेरे वही मेरे इरादे

चाँद

मीलों
दूर रहते हुए
भी हम एक ही चाँद ताक रहे है,
अपनी अपनी खिड़कियों से, झरोखों से, छतों
से, बालकनियों से
हर रात, देर तक,
हम महसूस कर रहे है एक दूसरे को,
मैं ताक रहा हूँ चाँद को जैसे तुम्हें ताकता था
खिड़कियों के दरमियान कभी,
तुम ताक रही हो चाँद को, जैसे छुप छुपकर
निहारती थी मुझे अपनी खिड़कियों से बाहर
झाँककर तुम,
दो अलग शहर, दो अलग छत
दो अलग खिड़कियाँ,
दो लोग आपस में जुड़े,
एक चाँद, एक सी ही यादें
कितना सब कुछ घट रहा है,
और घटते जा रहे है हम,
कहानियों में चाँद की ।

शुभम चौधरी

बुढ़ापा

बहुत दिन बाद मेरी रूह ने मेरे दिल से पूछा,
क्या बुढापा तुम्हें भी सताने लगा है,
या फिर तुम यूं ही नहीं हंसते बचपन की तरह,
क्या यह याददाश्त की कमी है या है वक्त की किल्लत, कि तुम अब याद नहीं करते वह स्कूल और कॉलेज के दिन, या तुम्हें फिक्र है आंखों में बसी उन नन्हीं सी बूंदों की।
सच बताओ साहिर, बुढ़ापा तंग करता है क्या?
क्या तुम भुला चुके हो हर किस्सा,
जवानी, दोस्ती और आशिकी का
या दबा के रखते हो उसे दिल में कहीं,
अकेलेपन में खुद को ढूँढने के लिए, है
सुना है तुम्हारे बच्चे तुम्हें मिलने नहीं आते,
तुम्हें फोन तक नहीं करते,
मगर सच बताओ उनकी यादों से तो हर रोज मिलते हो ना तुम,
बुढ़ापे में अकेले रहते हो घर में, कहीं भूल तो नहीं जाते किसी तस्वीर को हार चढ़ाना,
बताओ ना बुढ़ापा सताता है क्या,
क्या बच्चों को देखकर तुम भी बचपन में खो जाते हो,
और मुस्कुराते हो दर्द छुपाने के लिए,या भूखे पेट सो जाते हो कभी,
खुद से ही नाराज होकर, सच बताओ
अकेलापन परेशान नहीं करता तुम्हें,
या सितारे तुम्हें अपने पास नहीं बुलाते
(पास में रह रहे बुजुर्ग दंपति को समर्पित ।)

शुभम चौधरी

गुरूर

गुरूर ... आखिर किस बात का,
किसी को काया का
किसी को माया का
तो किसी को धर्म जात का
आखिर यह गुरूर किस बात का ।।

गुरूर काया पर अच्छा ....
काया तो एक दिन जल जाएगी
जिनकी जलेगी नहीं मारी तले गल
जाएगी,

जिस खूबसूरती से तुम पहचाने गये,
क्या लगता है सांस धमते ही कितने
लोगों को भाएगी।
इस बात से तो वाकिफ हो ना,
कितनी ही हसीन मूरत क्यों ना हो
रक्त जमते ही धड़कन थमते ही
घर से जल्द से जल्द निकली जाएगी।।
ते फिर गुरूर इस काया पर
किस बात का ।।

गुरूर माया पर अच्छा ....
चलो जो माटी तले दफनाया जायेगा
तो साथ कफन ओड़ कर तो जायेगा।
अरे उठो जलने वालों .....
तुम्हें तो नग्न जलाया जायेगा।
मुट्ठी बांधे आया था तो हाथ पसारे
जायेगा।
क्या लेकर आया था जो कुछ लेकर
जायेगा।।
तो गुरूर इस माया पर किस बात का ।।

गुरूर धर्म –जात पर अच्छा ....
जितना चाहे तुम बांट लो
इंसान को इंसानी हालात में,
लहू कैसे लायेगे धर्म और जात में,
तुम कहो खुदा या वोह गुरू या कहो
भगवान उसे, जिससे
जितने चाहे दे दो तुम नाम उसे
रूह जब इनके पास जाऐगी अपना
नाम
क्या बताओगे वहां कौन सा धर्म जात
लिखाओगे,
बस एक मामूली इंसान हो इतना ही
कह पाओगे।
तो फिर गुरूर धर्म–जात पर किस्मत
का

श्रद्धा सक्सेना
कनिष्ठ सहायक

नई शुरूआत

चलो फिर से शुरूआत करते हैं
एक नये दिन, नई शाम, नये पल का, नये अंदाज से आगाज करते हैं,
चलो फिर से शुरूआत करते हैं।

क्या हुआ अगर तेरा बीता हुआ वक्त अच्छा नहीं था,
वे बीता हुआ पल बस एक साया है।
मना तेरा कोई साथी सच्चा नहीं था,
पर अच्छा बुरा तो हर जिंदगी में आया है।
चल ठीक है गर तूने जिंदगी की ठोकरें
औरों से कुछ ज्यादा खाई हैं,
सोच ना यार तुझे जिंदगी का तजुर्बा भी तो औरों से ज्यादा आया है।

जिस पत्थर को ठोकर से तुम गिरे थे ना
वो जिन्दगी का फेंका हुआ एक पासा है।
तुझे चट्टान सा फौलाद बनाने को,
जिन्दगी ने तो बस तेरी राहों को संजाया है।

वो क्या है ना कि हीरे की चमक बिना
जिसे अगर आई होती तो सोच उसकी कीमत हम इंसानों ने कितनी
सस्ती लगाई होती है।
चन्द लहरों से तेरी आंखे नम और तेरे गाल गीले हैं,
अभी तो सागर की थपेड़ बाकी है। पर तू जानता है ना पानी से वहीं
लड़ते है जिन्हें आती तैराकी है।

जिन्दगी ने तुझे कुछ सोच समझ कर चुना है,
तू परिक्षाओं से मत डर
जो हो गया सो हो गया, मिट्टी पा फिर से एक नई शुरूआत तो
कर।
इतना सोच सम्भल कर चलेगा तो गिर
कर सम्भलने से पहले ही हार जाएगा,
अभी तो बिना इतना सोचे बस निकल
पड़ किसी राह पर,
शायद तेरी मंजिल उसी राह पर पायेगा अच्छा,
सुनो,

हर जिन्दगी की कहानी अलग होती है और किरदार भी,
उनके वास्ते अलग है और राज़दार भी,
उनके हालात अलग है और हाथों में हाथ भी,
अगर डूब जाओगे किसी ओर की कहानी में इस कदर,
यूं टूट जाओगे चन्द आने–जाने वाले मौसमों से,
तो खुद की कहानी ओर जमीन पर तुम्हारा मकसद पूरा कैसे होगा।
देखों तुम तूफानों से लड़कर भी डट कर खड़े हो ना,
हर हालात से लड़े हो ना,
और तुम्हारे सच्चे रिश्ते इस जंग में तुम्हारे साथ हैं,
अरे क्या सोच रहे हो तुम अकेले हो,
अरे रे यह कोई सोचने की बात है।

क्या यह काफी नहीं कि तुम्हारी सांसे चल रही है और तुम अभी जिन्दा हो।
क्या यह काफी नहीं कि तुम्हारे अपनों की मुस्कुराहट की तुम एक वजह हो।

यह काफी है काफी है कि तुम खुद पर विश्वास कर सकों कि तुम्हारी जिंदगी में तुम बेस्ट कर सकते हो,
यकीन करो कि तुम्हारी जिन्दगी तुमसे बेहतर कोई नहीं जी सकता,

कोई उतना हार नहीं सकता, जितना तुम हारे हो,
कोई उतना जीत नहीं सकता, जितना तुम जीतने वाले हो,

और बस यहीं सोच कर खुद से कहो कि चलो फिर से काक की नई शुरूआत करते हैं

श्रद्धा सक्सेना
कनिष्ठ सहायक

चंद्रयान –3 की सफलता उपरांत भारत का अंतर्राष्ट्रीय स्पेस जगत में भूमिका व प्रभाव

भारत एक निरंतर अग्रसर राष्ट्र, जो विश्व में अपनी संस्कृति और सभ्यता के लिये विख्यात है। जिसने विश्व को सिंधु घाटी सभ्यता, साधारण रहन सहन और सांस्कृतिक विचारधाराओं की परिभाषा दी। आज उन विचारधाराओं को संजोये रखते हुए तकनीकी क्षेत्र में अग्रणी राष्ट्रों की बात करते थे, तो गिनती सिर्फ अमरीका, रूस, चीन और जापान जैसे देशों तक आते–आते सीमित हो जाती थी।

चांद पर जाना, उसे तोड़ना यूं तो एक वक्त कहावतों में सुना जाता था, किंतु आज जब अगस्त 24 2023 को भारत ने चंद्रयान को चांद की सतह के दक्षिण भाग में सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया तो पूरे विश्व में देश के प्रति नई और जोशीली ऊर्जा का संचार करने वाली यह ऐतिहासिक घटना ने सभी को एक साथ, कुछ पल के लिए अपने सारे द्वेश और विकारों को अलग रखे सोचने के लिए प्रेरित किया।

चंद्रयान –3 में सबसे महत्वपूर्ण योगदान देने वालों में जो वैज्ञानिक थे। उसमें महिलायें बहुतायात में थी, जो यह प्रदर्शित करता है कि देश वाकई में नई ऊंचाईयों की ओर है। जब अखबारों में यह तस्वीर पूरे देश में फैली और लोगों ने देखा कि जो महिलायें इसरो में वैज्ञानिक हैं, वह बड़े गर्व से अपने संस्कृति, परंपरा और धर्म का अनुसरण करती हैं, जो उनके वेशभूषा में भलिभांति देखा जा सकता था। जिससे यह सिद्ध होता है कि आप अपने जड़ों से जुड़कर भी तकनीकी क्षेत्र में नए मुकाम पा सकते हैं। यही चीजें किसी देश को एक महान देश बनाती है।

यह उपलब्धि भारत देश को नई पहचान देती है, जो राष्ट्र अब तक यह मानते थे कि भारत एक ऐसा देश है जिसमें हजारों मर्ज है। '' यूं कहें कि एक ऐसा चांद जिसमें अनगिनत दाग (धब्बे) हैं।'' आज वहीं देश भारत की तारीफों के पुल बांधते नहीं थकते। भारत की यह उपलब्धि आने वाले समय में नई युवा शक्ति को जागृत करेगी, वो युवा जो पहले अपने भविष्य को देश के बाहर कहीं देखते थे। आने वाले समय में जरूर चाहेंगे की वह देश के लिये अपनी शिक्षा, बुद्धि और विवके का योगदान दें। जो भारतीय नागरिक वर्षों से विदेश में काम कर रहे हैं। उनके लिये भी नये अवसर हैं। साथ ही विदेशों में रहने वालों को भारत में उनके भविष्य से भी जोड़ेंगी।

आने वाले समय में भारत एक महत्वपूर्ण नाम होगा अंतरिक्ष के क्षेत्र में जो ऐसे कई कारनामें कर चुका होगा, जिसमें शामिल होगा, किसी मानव को अंतरिक्ष/चांद पर भेजना। इस वक्त भी एक होड़ है कि कौन कितनी जल्दी नये–नये विकल्प ढूंढ पायेगा, जब पृथ्वी पर चीजें सामान्य नहीं रहने वाली हैं । उस वक्त तक भारत विश्व में इसरो (संस्थान) की मदद से अपनी ही नहीं बल्कि पड़ोसी देशों की भी सहायता करेगा। जिससे वह भारत पर निर्भर होंगे। भारत विश्व में हमेशा से एक गैर निरपेक्ष राष्ट्र रहा है, जो अपने फैसले इस बात से लेता है कि इससे विश्व को कितना कल्याण होगा। यही वजह है कि भारत समय–समय पर अमरीका, रूस, ब्रिटेन जैसे देशों की सहायता उनके सेटेलाइट (उपग्रहों) को अपनी निश्चित परिक्रमा में पहुंचा के कर चुका है। इसकी एक और वजह है कि एक ऐसी तकनीक विकसित करना जो ना कि सफल हो बल्कि कम खर्चीली भी हो। आज संचार के माध्यम दूरदर्शन, इंटरनेट सेवा, जैसी तमाम उपयोगी चीजें मानवनिर्मित उपग्रहों पर निर्भर हैं। यह एक ऐसा समय है, जहां ज्ञान ही शक्ति है। इस दौर में अंतरिक्ष की यह दौड़ भारत को उसके विश्व गुरू बनने के पथ पर अग्रसर करती है।

राहुल उइके, परियोजना सहायक

दुर्घटना व अपराध कम करने हेतु वास्तुकला व नियोजन को ध्यान में रखते हुए बनाई गई डिजाइन की भूमिका

तत्काल समय में बढ़ते हुए सड़क हादसों के कारण बहुत से मनुष्यों को जीवन का अंत होने की खबरों का आना एक बहुत ही आम विषय बन गया है। सड़कों पर बढ़ रहे वाहनों के कारण आम मनुष्य अपना जीवन खो देता है, जो कि बहुत कीमती है, और इन दुर्घटनाओं का बोझ उस मनुष्य के प्रियजनों को सदैव के लिए भोगना पड़ता है, इसी प्रकार से आपराधिक घटनाएं भी बढ़ती जा रही हैं, चाहें वो ग्रामीण नियोजन एवं वास्तुकला से संबंध रखते हैं। यह दोनों ही विषय एक दूसरे के साथ मिलकर यदि हमारी योजनाओं में शामिल किए जाते हैं तो अपराध और दुर्घटनाओं के क्षेत्र में कमी ला सकते हैं।

नियोजन का शहरी दुर्धटनाओं पर प्रभाव

भारतीय शहर मुख्य रूप से बिना किसी नियोजित योजना के ही स्थापित किये जाते थे, प्राचीन समय में हर नगर में नियोजन का कार्य नहीं किया जाता था जिस कारण वो बेढंगे तरीके से स्थापित हो जाते थे, और वही शहर आज भी मौजूद है और लोग आज भी उन जगहों पर अपना जीवन यापन करते हैं।

जब जनसंख्या बढ़ने के साथ इन शहरों का विस्तार हुआ तो बाहरी क्षेत्रों में उन्हें नियोजित रूप से बनाया गया। समय के साथ साथ यह स्थितियां सामने आयी कि जो शहरी इलाके अत्यंत भीड़–भाड़ वाले हैं उनमें चोरी, हाथा–पायी अधिक होती दिखी, इसका कारण यह है कि इन भीड़ वाले इलाकों में अपराधियों को छुपने में आसानी होती है। इसका एक मुख्य उदाहरण यह है कि मध्यकाल में पैरिस शहर की संकरी और तंग गलियों वाले क्षेत्रों को तोड़कर नया नगर स्थापित किया गया जिसके सभी छःमुख्य रास्ते वहां के राजा के घर मिलते थे, इस से आसानी यह हुई कि पहले अपराधी तंग रास्तों में आसानी से छुप जाते थे और सैनिक उन्हें खोजने में असमर्थ होते थे और नियोजित शहर बनने के बाद उन अपराधियों को आसानी से पकड़ा जाता था। इस वजह से पैरिस शहर में अपराध अत्याधिक कम हो गया था। इस घटना को नियोजन की दुनिया में बोहौस कहा जाता है।

वास्तुकला एवं नियोजन का अपराध एवं दुर्घटना से संबंध

किसी भी भवन का निर्माण करते समय इस बात का अत्यंत ध्यान रखा जाता है कि वह भवन भविष्य में किसी अपराधिक घटना या किसी दूसरी प्रकार की घटना का विषय न बने, उदाहरण के तौर पर यदि किसी सामुदायिक भवन का निर्माण बिना अग्नि बचाव की सीढ़ियों के किया जाए तो अग्नि लगने की दशा में वहां उपस्थित लोगों का जीवन खतरे में पड़ सकता है। इसी प्रकार एक नारी सड़क पर चलते हुए उस समय खुद को सुरक्षित महसूस करती है जब फुटपाथ के सहारे बनी हुई दीवार जालीदार हो जिससे यह अहसास रहता है कि यह लोग उपस्थित है और वह नारी उस मार्ग पर बिना किसी भय के चल सकती है।

यदि हमें अपने नगरों एवं आसपास के क्षेत्रों को सभी नागरिकों के लिए अनुकूल बनाना है, तो वास्तुकला एवं नियोजन दोनों को एक साथ लाकर कार्य करना बहुत आवश्यक है।

अजीम अख्तर, छात्र, परिवहन योजना एवं लाजिस्टिक्स प्रबंधन

चंद्रयान 3 की सफलता भारत का अंतर्राष्ट्रीय स्पेस जगत में भूमिका व प्रभाव

भारत के लिए प्राचीन काल से स्पेस जगत/सौर मण्डल अनछुआ नहीं रहा है। सौरमण्डल/स्पेस का अध्ययन एवं शोध करने में भारत हमेशा अग्रणीय रहा, स्पेस इतना जटिल और वृहद है कि इसका अध्ययन एवं उसके बारे में जानकारियों जुटाना मानव के लिए सदा से ही जटिल कार्य कर रहा है। प्राचीन काल में आज का ज्योतिष शास्त्र वास्तव में गृह के बारे में अध्ययन उसके प्रभाव के बारे में रहा है, भारत का ज्योतिष शास्त्र हमें बताने में सफल रहा है कि कौन सा गृह कितने समय में परिक्रमा कर रहा है। पूर्णिमा से अमावस्या तक घटते बढ़ते चन्द्रमा की परिक्रमा से लेकर सूर्यग्रहण एवं च्रन्द्रग्रहण की सटीक भविष्यवाणी, ज्योतिष शास्त्र करने में सफल है:

आधुनिक काल में स्पेस के बारे में अध्ययन एवं रिसर्च करने का कार्य सर्वप्रथम अविभाजित क्रम से शुरू हुआ, इसके साथ ही अमेरिका ने चंद्रमा में मानव भेजकर सारे नए आयाम स्थापित कर दिए परंतु फिर भी चन्द्रमा के दक्षिण ध्रुव/हिस्से तक पहुंचने में अभी तक कोई भी देश सफल नहीं रहा था। भारत से पहले जिन तीन देशों के यान चन्द्रमा पर उतरे वो चांद के उस हिस्से में दाखिल हुए जो कि पृथ्वी से दिखाई देता है, अर्थात उत्तरी हिस्से में, परंतु भारत विश्व का प्रथम देश है कि जो चन्द्रमा के दक्षिणी हिस्से में अपना यान उतारने में सफल रहा भारत के इस सफलतम प्रयास के ठीक एक माह पहले ही रूस का लूना इस प्रयास में असफल रहा था, चंद्रयान को चन्द्रमा पर भेजना और सफलतम तरीके से चन्द्रमा के सतह पर उतार देना यह एक दुर्लभ कार्य है जिसमें भारत सफल रहा है।

हाँलाकि भारत स्पेस जगत में अपनी धार और छाप हाल ही के वर्षों में मनवा चुका है भारत कई देशों के लिए सैटेलाइट छोड़ रहा है जो कि उनके पर्यावरण, मौसम एवं अन्य कई आवश्यकताओं को पूरा करने में महति भूमिका निभा रहा है। भारत के चंद्रयान 3 चन्द्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक उतरा। भारत सहित पूरा विश्व अचंभित और गर्वित हो गया चन्द्रयान 3 की सफलता पर विश्व भर की स्पेस एजेंसियों ने भारत को बधाई दी। चन्द्रयान 3 का रोवर पूर्णतः स्वदेशी है, इस मिशन की सफलता ने भारत को स्पेस जगत के अत्यंत दुर्लभ संघ में महत्वपूर्ण स्थान पर आसित कर दिया है।

भारत आज रूस, जापान, अमेरिका, चीन जैसे देशों के साथ खड़ा हो गया है, भारत के इस मिशन को सफलता स्पेस जगत में विश्व को एक बड़ी सौगात है। जो कि चन्द्रमा के अध्ययन करने में विश्व की अत्यंत सहायता करेगी।

कुश श्रीवास्तव, लेखापाल

स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

अंक 9, वर्ष 2023

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) कैलासा एम. राव, निदेशक

सदस्य

प्रो. अजय खरे, प्राध्यापक एवं संकायाध्यक्ष (अनुसंधान)
श्री शाजू वर्गीज, कुलसचिव
प्रो. संजीव सिंह, प्राध्यापक
प्रो. रचना खरे, प्राध्यापक एवं संकायाध्यक्ष (छात्र मामले)
प्रो. विशाखा कवठेकर, प्राध्यापक
डॉ. श्वेता सक्सेना, सहायक प्राध्यापक
श्री मनीष विनायक झोकरकर, सहायक कुलसचिव
श्री धीरेन्द्र कुमार पधान, हिंदी अधिकारी (प्रभारी)
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिन्दी सहायक
श्री शुभम चौधरी, छात्र, वास्तुकला

सम्पादक मण्डल

डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
डॉ. मुकेश पाठक, उप पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री अमित खरे, सहायक कुलसचिव
श्रीमति दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिंदी सहायक
श्री शुभम चौधरी, छात्र, वास्तुकला

पत्रिका के मुख पृष्ठ का अभिकल्पन

सुश्री समृद्धि कौशिक, छात्रा, वास्तुकला

पत्रिका के आंतरिक पृष्ठों का अभिकल्पन

श्री शुभम चौधरी, छात्र, वास्तुकला
श्री कार्तिकेय मिश्रा, छात्र, योजना

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल, मध्य भारत के झीलों के शहर में स्थित है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की पृष्ठभूमि में मालवा यास्तुकला का अर्थ समाहित है, जो कि मालया सल्तनत की राजधानी मांदू में स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर के सामने महादेव के प्रतीक एक शंखनुमा घुमावदार जलवाहिका है। भक्तजन पुष्प को पूर्ण आस्था के साथ अपनी इच्छापूर्ति हेतु इसमें अर्पित करते हैं। जलवाहिका में प्रवाहित जल, पुष्परूपी इच्छा के साथ जीवन के संघर्ष एवं ध्येय की सफलता का संकेत देता है। जो कि वास्तुकला का अभिन्न अंग एवं योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल स्वरूप का प्रतीक है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह में शंखाकार रूप में दर्शित 'S' अग्नि 'P' वायु तरंग एवं 'A' पानी की बूंद प्रदर्शित करती है प्रतीक चिन्ह के नीचे संस्कृत में लिखा श्लोक 'रथपतिः स्थापनाएं स्यात् सर्वशास्त्रः समरांगना सूत्रधार से उद्दत है जिसका अर्थ है कि वास्तुकार को वास्तुकला के साथ सभी विषयों का ज्ञाता होना चाहिए. प्रतीक चिन्ह का उद्देश्य छात्रों को वास्तुकला के साथ-साथ सर्व विषयों में पारंगत कर भविष्य में एक नये आयाम के लिए तैयार करना है।

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, शिक्षा मंत्रालय, मंत्रालय, भारत सरकार) - नीलबड रोड, भौरी, भोपाल (म.प्र.) 462030 (भारत)

Website: www.spabhopal.ac.in